International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

समाज सेवा के परिप्रेक्ष्य में ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी का योगदान: विवर्णात्मक अध्ययन

डॉ. सोनम[1], रविन्द्र कौर[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, समाज शास्त्र/समाज कार्य विभाग, नीलम यूनिवर्सिटी, कैथल।
[2]पीएच. डी. रिसर्च स्कालर, नीलम यूनिवर्सिटी, कैथल।

शोध आलेख सार

ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी समाज सेवा से संबधित एक महत्वपूर्ण संस्था है जिसको भगत पूरन सिंह द्वारा अमृतसर में स्थापित किया गया था। अपनी स्थापना के समय से ही यह संस्था जरूरतमंदों और रोगियों की सेवा में निरंतर तत्पर है। बिना किसी स्वार्थ और बिना किसी भेद-भाव बेसहारों का सहारा बन के यह संस्था समाज सेवा में अपना विशेष योगदान दे रही है। इस संस्था द्वारा मानव भलाई और समाज सेवा के लिए विभिन्न साखाएं, अस्पताल, दंत चिकित्सालय, अल्ट्रासाउंड केंद्र, नेत्र चिकित्सालय, कृत्रिम अंग केंद्र, फिजियोथेरेपी केंद्र एवं सिलाई और कढ़ाई केंद्र आदि स्थापित किए गए है जिनके संबंध में प्रस्तुत पेपर में शोधपूर्ण जानकारी प्रदान की गई है।

मुख्य शब्द: पिंगलवाड़ा, मानसिक, संस्था, सेवा

भगत पूरन सिंह द्वारा स्थापित ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी बेघरों का घर, निराश लोगों की आशा, बीमारों का अस्पताल और अनाथ एवं परित्यक्त बच्चों का आश्रय है। इसकी परिकल्पना लाहौर के गुरुद्वारा देहरा साहिब के शांत वातावरण में हुई थी, जहाँ संस्थापक अक्सर सड़क किनारे फुटपाथों आदि पर अपना जीवन यापन करने वाले कुछ बेसहारा, असहाय, बीमार और वृद्ध लोगों को देखते थे। देश के विभाजन के बाद इसे अमृतसर में बनाया गया। पिंगलवाड़ा को इसके संस्थापक भगत पूरन सिंह द्वारा द्वारा 6 मार्च 1957 को पंजाब और हिमाचल प्रदेश के कंपनी रजिस्ट्रार के समक्ष 'अखिल भारतीय पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी (पंजीकृत), अमृतसर' के रूप में पंजीकृत कराया गया था। इस संस्था की स्थापना का विचार और आवश्यकता इसके संस्थापक के मन में उक्त गुरुद्वारे में ही उत्पन्न हुई थी, जिसे उन्होंने 1934 ईस्वी में और भी अधिक गहराई से महसूस किया जब चार वर्षीय स्पैस्टिक से पीड़ित बच्चा उनकी देखभाल में आया।

वर्तमान में, पिंगलवाड़ा की सात शाखाएँ हैं, जिनमें से एक-एक चंडीगढ़, संगरूर, जालंधर, गोइंदवाल, मानांवाला और पंडोरी वड़ैच में स्थित हैं। इनके अलावा, अमृतसर में मुख्यालय और मुख्य शाखा भी है। इन सभी शाखाओं में

कुल 1700 जरूरतमन्द एवं मरीज हैं। इन जरूरतमंदों एवं मरीजों की देखभाल करने के अलावा, पिंगलवाड़ा में 5 स्कूल, 2 दंत चिकित्सालय, एक अल्ट्रासाउंड केंद्र, एक नेत्र चिकित्सालय, एक कृत्रिम अंग केंद्र, एक फिजियोथेरेपी केंद्र, एक सिलाई और कढ़ाई केंद्र आदि भी संचालित किए जा रहे हैं। इन सभी के अतिरिक्त ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी, अमृतसर द्वारा शिव विहार मेट्रो स्टेशन के सामने पिंगलवाड़ा की नई शाखा दिल्ली में स्थापित की गई है, जो कि निर्माणाधीन है। 100 बिस्तरों का वार्ड बनाया जा चुका है। ये सभी सेवाएं और सुविधाएं निःशुल्क प्रदान की जाती हैं। वर्तमान में इस संस्था का प्रबंधन सात सदस्यीय पंजीकृत समिति द्वारा किया जा रहा है, जिसकी प्रमुख डॉ. इंदरजीत कौर संरक्षक अध्यक्ष हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा संस्था द्वारा समाज सेवा के परिप्रेक्ष्य में निभाई जा रही रही विभिन्न सेवा कार्यों से संबंधित है। इस संबंध में यह संस्था विभिन्न सेवा कार्य निभा रही है जिसमें सबसे जरूरी सेवा विभिन्न रोगों से ग्रस्त मरीजों का शारीरिक इलाज और उनकी देखभाल से संबंधित है। पिंगलवाड़ा संस्था गंभीर रोगों से ग्रस्त रोगियों की समस्या को चिकित्सा-सामाजिक क्षेत्र में एक नए और अद्वितीय ढंग से सुलझा रही है। यह संस्था हर उस मरीज की सेवा करती है जिसे शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के इलाज की जरूरत है। मरीज को अस्पताल की जरूरत सिर्फ रोग के इलाज के लिए ही नहीं, बल्कि भोजन, कपड़े, छत, देखभाल और अन्य मूलभूत जरूरतों के लिए भी होती है। हर मरीज के पास उसका कोई रिश्तेदार उसकी सहायता के लिए नहीं होता, और न ही उसके पास अपना गुजारा करने के लिए धन होता है। हज़ारों-लाखों लोग न केवल बेसहारा हैं बल्कि निर्धन भी हैं। हर वह व्यक्ति जो शारीरिक रूप से रोज़ी-रोटी कमाने के योग्य नहीं है, उसका यह मौलिक अधिकार है कि उसकी देखभाल सामाजिक सेवा और दान के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा की जाए। इसे हर मनुष्य का बुनियादी और मूल अधिकार माना जाना चाहिए। यदि वित्तीय साधनों की कमी या अन्य कारणों से अधिक संख्या में अस्पतालों की स्थापना नहीं की जा सकती तो इस बात का कोई कारण नहीं कि इन लोगों की देखभाल के लिए स्वयं-सेवी चिकित्सा-सामाजिक संस्थाएं न बनाई जाएं। जैसे अनाथों और बुजुर्गों के लिए संस्थाएं बनाई गई हैं, उसी तरह बीमारों के लिए भी ऐसी संस्थाएं बनाई जानी चाहिए थीं। लोग यह सोचते हैं कि किसी गरीब या बेसहारे मरीज़ की चिंता करना उनका काम नहीं, बल्कि अस्पताल अधिकारियों या सिर्फ़ सरकार का काम है। निश्चित ही रोग की पहचान करना और उसका इलाज करना अस्पताल का काम है परंतु यदि अस्पताल हर गरीब मरीज़ को शारीरिक इलाज नहीं दे सकते और तो लोगों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वे चिकित्सा-सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से भोजन, आवास और अन्य ज़रूरी ज़रूरतें मुहैया करवा कर मरीज़ों को अस्पताल की सेवाओं का लाभ लेने के योग्य बनाएं।

मरीज़ की ज़रूरतों में से सबसे मुख्य ज़रूरत है रोग की पहचान करना और उसका इलाज सुनिश्चित करना, पर जो ज़रूरतें गैर-चिकित्सा पक्ष जैसे ज़रूरतमंदों की मानसिक तृप्ति से संबंधित हैं, उनकी पूर्ति गैर-चिकित्सा संस्थाएं ही कर सकती हैं। जब अस्पताल बहुत सारे मरीज़ों का सिर्फ़ शारीरिक तौर पर इलाज कर सकते हैं, तो मानसिक इलाज की कमी और उनकी अन्य ज़रूरतें जैसे घर, रोटी, देखभाल एक बड़ी चुनौती बन जाती है, जिसका हल सेवा संस्थाओं की स्थापना है, पर दुःख की बात यह है कि इस दिशा की ओर गंभीर ध्यान नहीं दिया गया। भारत में अस्पतालों के बिस्तरों की संख्या बहुत सीमित है, जो कि मरीज़ों की असली ज़रूरत से काफ़ी कम है। ख़ास तौर पर मानसिक रोगियों और टी.बी. रोगियों के लिए यह कमी बहुत ही गंभीर रूप में है।

बहुत से मामलों में तो अस्पताल केवल रोग की पहचान करते हैं पर इलाज करने में असमर्थ होते हैं। इसलिए बीमारी की समस्या का हल यह है कि ऐसी संस्थाएं बनाई जाएं जो मरीज़ों का इलाज करने के साथ-साथ उनकी देखभाल भी करें। टी.बी. जैसे रोग की जांच अपने आप में बहुत महंगी है, जो आम गरीब लोगों की पहुँच से बाहर है। प्रत्येक टी.बी. मरीज़ को क्लिनिक की सुविधा कैसे मिल सकती है? असल में, देश के हर जिले में टी.बी. क्लिनिक मौजूद नहीं हैं। यदि ये क्लिनिक हर जिले में भी हों, तो भी गाँवों में बसने वाले लाखों मरीज़ उनसे सीधा लाभ नहीं ले सकते। मरीज़ों को कई तरीकों से व्यक्तियों या संस्थाओं की मदद की ज़रूरत होती है ताकि वे टी.बी. क्लिनिक तक पहुँच सकें। यदि मरीज़ बहुत कमज़ोर हो या उसके पास यात्रा के लिए धन न हो, तो वह क्लिनिक तक नहीं जा सकता। शहर पहुँचने के उपरांत भी उसे रहने-खाने की व्यवस्था की ज़रूरत होती है। ख़ासकर गंभीर अवस्था में टी.बी. मरीज़ चलने योग्य नहीं रहते, जिसके लिए विशेष संस्थाओं की ज़रूरत है जो हर तरह से उनकी सहायता कर सकें। इसके अलावा, रोग के फैलाव को रोकना भी बहुत महत्वपूर्ण है। देश में लगभग 90 लाख टी.बी. मरीज़ों में से 30 लाख ऐसे हैं जो अगली अवस्था में होने के कारण अन्य लोगों को भी संक्रमित कर सकते हैं। ऐसे मरीज़ों को स्वस्थ लोगों से अलग रखना भी बहुत ज़रूरी है। भीड़-भाड़ वाले घरों में यह संभव नहीं। कोरोना काल के समय भी हमें इस गंभीर समस्या का सामना करना पड़ा था। भगत पूरन सिंह द्वारा पिंगलवाड़ा इसी उद्देश्य से बनाया गया था कि बीमार लोगों को सड़कों पर अनदेखे मरने से बचाया जाए। हर व्यक्ति बड़े अस्पताल तो नहीं बना सकता पर वह बीमारों की मदद करके उन्हें अस्पतालों की उपलब्ध सुविधाओं तक पहुँचने योग्य बनाने में योगदान पा सकता है। यह देश में एक नया चिकित्सा-सामाजिक प्रयोग है जिसकी विद्वानों और योजनाकारों द्वारा गंभीर अध्ययन करने की आवश्यकता है। मानसिक रोगियों की स्थिति तो इससे भी अधिक दुखदायी है। वे कई बार लोगों को मार देते हैं या घरों को आग लगा देते हैं। अन्य बीमारियों वाले मरीज़ अस्पताल तक किसी तरह पहुँच सकते हैं पर एक पागल व्यक्ति अपने आप नहीं जा सकता। उसे ले जाने के लिए अन्य लोगों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक परिवार यह मदद नहीं दे सकता, ख़ासकर छोटे या गरीब परिवारों के लिए यह बहुत मुश्किल कार्य है। कुछ मरीज़ तो बिल्कुल बेसहारा होते हैं, जिन्हें मानसिक अस्पताल में दाखिल करवाना और भी पेचीदा होता है। मानसिक बीमारी का इलाज तीन सालों की सीमा में संभव होता है, इसके बाद यह असाध्य हो जाती है। पहले साल में सुधार के मौके अधिक होते हैं, दूसरे और तीसरे साल मरीज़ के ठीक होने की अवधि घटती जाती है। यदि समाज सेवी संस्थाएं समय पर कुछ न करें तो यह स्थिति बहुत ही गंभीर रूप धारण कर जाती है। मानसिक रोगी सिर्फ राष्ट्र के लिए आर्थिक बोझ ही नहीं बल्कि लोगों की जान और जायदाद के लिए ख़तरा भी हैं। महिला मानसिक रोगियों की स्थिति और भी ख़तरनाक होती है क्योंकि वे अक्सर गली-मोहल्लों में असुरक्षित घूमती हैं और गंभीर रोगों का शिकार हो जाती हैं, जिससे यह रोग और भी तेज़ी से फैलते हैं।

पिंगलवाड़ा उत्तरी भारत की एकमात्र ऐसी संस्था है जो यह काम कई सालों से कर रही है और यह राज्य के विभिन्न हिस्सों से, यहाँ तक कि अन्य राज्यों से आने वाले अनगिनत मरीज़ों की सेवा-संभाल कर रही है। यह गंभीर स्थिति स्वास्थ्य विभाग और सामाजिक कल्याण विभाग की आँखें खोलने वाली होनी चाहिए। यह एक बुनियादी ज़रूरत है जिसकी पूर्ति बहुत समय से बाकी है।

पिंगलवाड़ा एक ऐसी संस्था है जो अपाहिज, विशेष योग्यता वाले, लंगड़े-लूले, मानसिक रोगियों, बौद्धिक रूप से कमज़ोर, अनाथ, बुज़ुर्ग और असाध्य तथा अंतिम अवस्था वाली गंभीर बीमारियों से पीड़ित व्यक्तियों का घर है। वर्तमान में यहाँ 1800 से अधिक मरीज़ रह रहे हैं जो सब के सब बेसहारा हैं और उनमें से बहुत से अपनी पूरी ज़िंदगी पिंगलवाड़े में ही बिताएँगे। पिंगलवाड़ा की कुल सात शाखाएँ हैं। इसके अलावा, पिंगलवाड़ा विभिन्न प्रकार के स्कूल

भी चला रहा है। ये स्कूल गरीब और जरूरतमंद बच्चों के लिए, सामान्य बच्चों के लिए, मानसिक रूप से कमज़ोर बच्चों के लिए, बहरे बच्चों के लिए हैं। इस संस्था में बीमारियों के इलाज के लिए भी कई केंद्र स्थापित हैं, जैसे कि- कृत्रिम अंग केंद्र (Prosthetic Centre), फिजियोथेरेपी केंद्र, दंत-चिकित्सा केंद्र, कान-नाक-गला (ENT) केंद्र, ऑपरेशन थिएटर, अल्ट्रासाउंड केंद्र, पूरी तरह साजो-सामान से लैस डिस्पेंसरी। पिंगलवाड़े की सभी शाखाओं में मौजूद रोगियों की संख्या का विवरण इस प्रकार है:

श्रेणी	**रोगियों की संख्या**
मानसिक रोगी	365
पक्षाघात/पोलियो	159
बौद्धिक रूप से कमजोर (Mentally Retarded)	447
गूँगे और बहरे	167
बुजुर्ग	148
घायल	29
टी.बी. रोगी	23
अंधे	42
एड्स रोगी	19
मिर्गी के मामले	199
कैंसर रोगी	1
मधुमेह के रोगी (Diabetics)	83
स्कूल जाने वाले बच्चे	88
छोड़े हुए बच्चे	4
सुधरे/ठीक हुए रोगी	29
कुल रोगी	1804

पिंगलवाड़ा की शाखाएँ

1. अमृतसर साहिब शाखा
2. पंडोरी वड़ैच शाखा
3. मानांवाला शाखा
4. गोइंदवाल साहिब शाखा
5. जालंधर शाखा
6. संगरूर शाखा
7. चंडीगढ़ शाखा

1. अमृतसर साहिब शाखा-

यह शाखा पिंगलवाड़ा संस्था का मुख्य दफ्तर है। यह अमृतसर जी.टी. रोड पर बस स्टैंड के बिल्कुल सामने स्थित है। यहाँ सभी दफ्तरी कर्मचारियों का निवास है। इसके अलावा यहाँ मुख्य प्रशासनिक कॉम्प्लेक्स, महिला वार्ड, बच्चों का वार्ड, पुनर्वास केंद्र, डिस्पेंसरी, मेडिकल लैब, डेंटल केंद्र, म्यूजियम और लंगर हॉल शामिल हैं। इसके मुख्य प्रशासक

स. परमिंदरजीत सिंह भट्टी हैं। यहाँ माता महताब कौर वार्ड भी है जो केवल महिलाओं के लिए है। यहाँ लगभग 170 मानसिक रूप से कमजोर, बुजुर्ग और अपाहिज महिलाएँ रहती हैं। यहाँ मरीज़ों की कुल संख्या 335 है।

2. पंडोरी वड़ैच शाखा-

यह शाखा अमृतसर से 9 किलोमीटर की दूरी पर अमृतसर-मजीठा रोड पर स्थित है। इसके इंचार्ज श्रीमती गुरदरश कौर हैं। इस शाखा में कुल 100 रहने वाले मरीज़ हैं, जिनमें अपाहिज, बीमार और लाचार व्यक्ति शामिल हैं।

3. मानांवाला शाखा-

मानांवाला शाखा अमृतसर से 8.5 किलोमीटर की दूरी पर जालंधर-अमृतसर जी.टी. रोड पर स्थित है। यह भगत पूरन सिंह जी के विज़न का प्रतीकात्मक और प्रयोगात्मक रूप है। इस शाखा के इंचार्ज स. जय सिंह हैं। यह शाखा 30 एकड़ में फैली हुई है। इस शाखा में बड़े स्तर पर इमारतें बनाकर एक आदर्श कॉम्प्लेक्स का निर्माण किया गया है। इस शाखा का पूरा विवरण इस प्रकार है:

3.1. भगत पूरन सिंह आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मानांवाला

इस समय इस स्कूल में गरीब और झुग्गी-झोपड़ी वाले बहुत सारे विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा दी जा रही है। संस्था का यह खास प्रयास है कि ये बच्चे अपने आप को हीन न समझें और अपने पैरों पर खड़े होकर समाज में रह सकें। इस आदर्श स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को किताबें और वर्दियाँ भी मुफ्त दी जाती हैं।

3.2. भगत पूरन सिंह स्पेशल स्कूल (गूँगे-बहरे बच्चों के लिए)

भगत पूरन सिंह गूँगे-बहरे बच्चों का स्कूल मानांवाला शाखा में मई 2005 से चल रहा है। इसमें बहुत सारे बच्चे नवीन उपकरणों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

3.3. भगत पूरन सिंह स्कूल ऑफ स्पेशल एजुकेशन

पिंगलवाड़ा के मंदबुद्धि बच्चों के लिए मानांवाला शाखा में 'भगत पूरन सिंह स्कूल ऑफ स्पेशल एजुकेशन' भी चल रहा है। जहाँ विशेषज्ञ और तकनीकी शिक्षा प्राप्त अध्यापक मंदबुद्धि बच्चों को शिक्षा देते हैं। इस स्कूल में इन बच्चों की जीवन शैली को विकसित करने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं।

3.4. कृत्रिम अंग केंद्र (Prosthetic Centre)

डॉ. इंद्रजीत कौर जी के प्रारंभिक मार्गदर्शन और समाज कल्याण को मुख्य रखते हुए संस्था द्वारा एक बनावटी अंग केंद्र नवंबर 2003 में मानांवाला शाखा में स्थापित किया गया है। संस्था द्वारा इस केंद्र में अब तक 7341 मरीज़ों को कृत्रिम अंग लगाए जा चुके हैं। ये मरीज़ अब इन बनावटी अंगों की सहायता से शारीरिक और आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भर होकर समाज में रह रहे हैं। भगत जी की सोच पर पहरा देते हुए यह केंद्र अपाहिजों को आत्मनिर्भर होने में भरपूर योगदान दे रहा है। इस सेंटर का उद्घाटन हेंस जोआकिम किडरलन, जो कि जर्मन फेडरल रिपब्लिक के दूतावास के मंत्री थे, द्वारा किया गया। जर्मन दूतावास ने इस सेंटर की स्थापना के लिए 3.0 लाख रुपये दान किए।
यह सेंटर अपाहिज व्यक्तियों के लिए कृत्रिम अंग प्रदान करता है, जिसमें प्रोस्थेसिस, ऑर्थोसिस, स्प्लिंट्स, स्पाइनल ब्रेस, सर्वाइकल ऑर्थोसिस, सर्जिकल जूते और सहायक उपकरण शामिल हैं। ये सभी उपकरण मुफ्त प्रदान किए जाते हैं। यह सुविधा उत्तरी भारत में अद्वितीय है। यह सेंटर सबसे योग्य इंजीनियरों और तकनीकी सुविधाओं से लैस है। यहाँ आधुनिक मशीनरी और उपकरण हैं जो सबसे जटिल मामलों को भी संभाल सकते हैं। इस सेंटर का वार्षिक खर्च लगभग 32 लाख रुपये है।

3.5. फिजियोथेरेपी केंद्र-

सन् 2005 से ही मानांवाला शाखा में चल रहे इस फिजियोथेरेपी सेंटर में आधुनिक उपकरणों के माध्यम से पिंगलवाड़ा के मरीज़ और गरीब, ज़रूरतमंद मुफ्त उपचार करवा रहे हैं और हर रोज़ बहुत सारे मरीज़ों का इलाज किया जाता है। इस केंद्र में नियुक्त स्टाफ फिजियोथेरेपी की तकनीकी शिक्षा प्राप्त और विशेषज्ञ स्टाफ है। फिजियोथेरेपी एक इलाजी विधि है जो मरीज़ की चलने-फिरने की क्षमता, शारीरिक कार्यकुशलता और सुख-भलाई को बहाल करने, संभालने और बढ़ाने के लिए की जाती है। यह इलाज शारीरिक सहायता, चोटों से बचाव, स्वास्थ्य और फिटनेस में मदद करती है। फिजियोथेरेपिस्ट मरीज़ को अपने पुनर्वास में सहभागी बनाते हैं। इस सेवा के तहत, न्यूरोलॉजी, मस्कुलोस्केलेटल बीमारियाँ, बच्चों और बुजुर्ग मरीज़ों का इलाज किया जाता है। फिजियोथेरेपी के ये तरीके इस संस्था में इलाज के लिए उपयोग किए जाते हैं: मैनुअल थेरेपी (जैसे मसाज), थेरेप्यूटिक एक्सरसाइज, इलेक्ट्रोथेरेपी, हाइड्रोथेरेपी, फिजियोथेरेपी उपकरण, अल्ट्रासाउंड थेरेपी, इंटरफेरेंशियल थेरेपी (IFT), इंफ्रा-रेड लैंप / लेज़र SS-2000, वैक्स बाथ थेरेपी यूनिट, हाइड्रो कोलेटर यूनिट, ट्रांसक्यूटेनियस इलेक्ट्रिकल नर्व स्टिमुलेशन (TENS), शॉर्टवेव डायथर्मी, कंटीन्यूअस पैसिव मोशन (CPM) यूनिट, ट्रैक्शन यूनिट, सेरागेम मशीन, शॉकवेव थेरेपी। यह सेंटर मरीज़ों को पूरी फिजियोथेरेपी सुविधा प्रदान करता है जो उत्तरी भारत में बेमिसाल है।

4. गोइंदवाल साहिब शाखा-

ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी की गोइंदवाल शाखा मुख्य गुरुद्वारा गोइंदवाल साहिब के पास तरनतारन रोड पर स्थित है। इस शाखा की इंचार्ज बीबी बलजिंदरजीत कौर हैं। यहाँ कुल 95 पुरुष मरीज़ रहते हैं। यह स्थान मुख्य गुरुद्वारे के पास होने के कारण मरीज़ों की देखभाल के लिए सुविधाजनक माहौल प्रदान करता है।

5. जालंधर शाखा-

यह शाखा मकदुमपुरा, धोबी मोहल्ला जालंधर में स्थित है और इस शाखा के प्रशासक स. संगत सिंह हैं। इस शाखा में कुल 50 रहने वाले मरीज़ हैं, जिनमें अपाहिज, मानसिक रूप से कमज़ोर और बीमार लाचार व्यक्ति शामिल हैं।

6. संगरूर शाखा-

ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी की संगरूर शाखा धूरी रोड, संगरूर पर स्थित है। इस शाखा के एडिशनल एडमिनिस्ट्रेटर स. हरजीत सिंह अरोड़ा हैं। यहाँ के मुख्य प्रशासक स. त्रिलोचन सिंह चीमा हैं। इस शाखा में रहने वाले कुल मरीज़ 218 हैं। इनमें स्कूल और कॉलेज जाने वाली लड़कियाँ, अपाहिज व्यक्ति और बीमार लाचार शामिल हैं। यहाँ बनाया गया ओल्ड एज होम कई बुजुर्गों को आसरा प्रदान करता है और उन्हें सुख-सहारा देता है।

7. चंडीगढ़ शाखा-

यह शाखा चंडीगढ़ के पास गाँव पलसोरा में स्थित है। यह शाखा जनवरी 2001 में खोली गई थी। उसके बाद यहाँ 200 मरीज़ों के लिए रहने की सुविधा बनाई गई है। वर्तमान समय में यहाँ 85 मरीज़ रहते हैं, जिनमें मानसिक रूप से कमज़ोर पुरुष, महिलाएँ, बच्चे और घर-विहीन बुजुर्ग शामिल हैं। इस शाखा में गरीब और लाचार लोगों के लिए एक मुफ्त डेंटल क्लिनिक चलाया जा रहा है। इसके साथ ही यहाँ खास बच्चों और बड़ों के लिए एक स्कूल भी चलाया जाता है। इस शाखा की मुख्य प्रशासक बीबी कुलजीत कौर हैं।

विदेशों में शाखाएँ-

पिंगलवाड़ा सोसाइटी ऑफ ओंटारियो, कनाडा, साल 1987 से बीबी अबिनाश कौर के मार्गदर्शन में पिंगलवाड़ा सोसाइटी ऑफ ओंटारियो, कनाडा में भगत पूरन सिंह जी की फिलॉसफी के बारे में जागरूकता फैल रही है। उनके साथ ओंटारियो, एडमिंटन, कैलगरी, विनिपेग और ब्रिटिश कोलंबिया से सेवादारों की एक समर्पित टीम काम कर रही है। कनाडा की साध संगत की ओर से नियमित योगदान मिल रहा है। इन योगदानों से पिंगलवाड़ा के कई बड़े प्रोजेक्ट जैसे कि मरीज़ों की देखभाल, रहने वालों के लिए भोजन और विभिन्न स्कूलों में मुफ्त शिक्षा चलाई जा रही है। इसके अलावा इंग्लैंड और अमेरिका में भी पिंगलवाड़ा संस्था के सेवादारों की टीम काम करती है।

भगत पूरन सिंह नर्सरी-

भगत पूरन सिंह जी पर्यावरण प्रदूषण को लेकर बहुत चिंतित रहते थे और वे हरियाली के प्रमुख समर्थक थे। उन्होंने खुद विभिन्न कई जगहों पर पौधे लगाए। संस्था द्वारा श्री सुंदर लाल बहुगुणा की प्रेरणा से साल 2001-2002 में एक नर्सरी लगाई गई ताकि पौधों के लिए पौध तैयार की जा सके। साल 2003 से इस नर्सरी में तैयार हो रहे पौधे विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों और अन्य संस्थाओं को दिए जाते हैं ताकि वे इन स्थानों पर ये पौधे लगा सकें। इस काम को आगे बढ़ाने के लिए पिंगलवाड़ा सोसाइटी हर साल बरसात के मौसम में पेड़ लगाने की मुहिम चलाती है। जहाँ हर साल 60,000 से अधिक पौधे मुफ्त बांटे जाते हैं। पेड़ लगाने की मुहिमों के दौरान, पिंगलवाड़ा के सेवादारों की टीमें स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों, पब्लिक हेल्थ सेंटरों, श्मशान घाटों और अन्य खुली जगहों पर मुफ्त पेड़ लगाती हैं। पिछले 15 सालों में 9 लाख से अधिक पेड़ सारे पंजाब में लगाए जा चुके हैं।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती-

पिंगलवाड़ा ने अपनी जीरो बजट प्राकृतिक खेती की शुरुआत धीरकोट (जंडियाला गुरु, अमृतसर के पास) और गाँव बंगवाली (जिला संगरूर) में की है। रासायनिक खादों और कीटनाशकों के अंधाधुंध इस्तेमाल ने लोगों के स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव डाला है-जैसे कि कैंसर, गर्भपात, और प्रजनन प्रणाली के रोग भयानक तरीके से फैल रहे हैं। इस प्रसंग में पिंगलवाड़ा के ये डेमोंस्ट्रेशन फार्म किसानों के लिए जीवंत नमूना हैं, जहाँ किसी भी कीटनाशक का उपयोग किए बिना खेती की जाती है। धीरकोट वाला फार्म इतना लोकप्रिय हो गया है कि हर रोज किसानों के समूह, कृषि-वैज्ञानिक और शोधकर्ता यहाँ दर्शन के लिए आते हैं। यहाँ जीरो बजट खेती के परिणाम न केवल संतोषजनक हैं, बल्कि पैदावार रासायनिक खेती से दोगुनी हो गई है। पिंगलवाड़ा द्वारा किसानों को इस तकनीक के बारे में शिक्षा देने के लिए कार्यशालाएं नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं। इस फार्म के काम ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की है कि अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने 2010 में अपने भारत दौरे के दौरान यहाँ आने की योजना बनाई थी। हालांकि यह यात्रा कुछ कारणों से न हो सकी, पर व्हाइट हाउस और अमेरिकी दूतावास की टीमें पहले ही धीरकोट फार्म और मानांवाला शाखा की सुरक्षा और सर्वेक्षण कर चुकी थीं। पिंगलवाड़ा का यह प्रयास एक खामोश और रचनात्मक क्रांति है, जो पर्यावरण बचाने, मिट्टी की उपजाऊ शक्ति पुनः स्थापित करने, किसान-मित्र जीवाणु पैदा करने और पर्यावरण संतुलन बहाल करने की ओर प्रयत्नशील है। यहाँ 32 एकड़ ज़मीन पर बिना किसी रासायनिक खाद या कीटनाशक के खेती की जाती है। इस प्राकृतिक खेती के कारण मिट्टी की उपजाऊ शक्ति न केवल दोबारा बनी है, बल्कि इसकी पैदावार रासायनिक खेती के समान या उससे भी बेहतर है। भगत पूरन सिंह जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में दर्शाए इस सिद्धांत 'पवन गुरु पानी पिता माता धरत महत' पर पूरा विश्वास रखते थे। यह विश्वास आज भगत पूरन सिंह नेचुरल फार्म में जीवंत रूप में नज़र आता है। यह खेती न केवल मिट्टी के लिए ज़्यादा लाभदायक और पर्यावरण-मित्र है, बल्कि कम खर्चे वाली (लगभग जीरो बजट) और ज़मीनी पानी के लिए भी कम ख़तरनाक है।

इस कारण मानवता को भयानक बीमारियों से बचाने में यह प्रयास बेमिसाल साबित हो रहा है। हालांकि इस संस्था का यह सीमित दायरा है, जिस स्तर पर पिंगलवाड़ा संस्था को इस प्राकृतिक खेती के मॉडल को पंजाब के गाँवों में पहुँचाना चाहिए था, उस स्तर पर इस मॉडल को यह संस्था प्रचार नहीं कर सकी।

छपाई प्रेस-

पिंगलवाड़ा अपनी खुद की छपाई प्रेस चला रहा है, जिसका नाम पूरन प्रिंटिंग प्रेस है। जहाँ हर रोज लगभग 20,000 पृष्ठ छापकर मुफ्त में आम लोगों में बांटे जाते हैं। इस प्रेस में कुल 19 प्रिंटिंग मशीनें, 2 कटिंग मशीनें और 2 पिनिंग मशीनें लगाई गई हैं। इन मशीनों को चलाने के लिए 60 कर्मचारियों की टीम नियुक्त है। यह टीम नीचे लिखे पदों पर काम करती है:

1. मैनेजर 1
2. सुपरवाइजर 1
3. प्रूफ रीडर 4
4. बुक बाइंडर 16
5. प्रेस वर्कर 38

यह प्रेस पिंगलवाड़ा संस्था के संदेश, धार्मिक और सामाजिक साहित्य को लोगों तक पहुँचाने में केंद्रीय भूमिका निभा रही है।

मुफ्त मेडिकल सुविधाएं-

पिंगलवाड़ा की डिस्पेंसरी का वार्षिक बजट 60 लाख रुपये है। यह डिस्पेंसरी न सिर्फ मरीज़ों को दवा प्रदान करती है, बल्कि सभी कर्मचारियों के परिवारों को भी दवा मुहैया कराती है। इसके अलावा, हर महीने 200 से अधिक मानसिक और ज़रूरतमंद मरीज़ों को मुफ्त दवा दी जाती है। डेंटल क्लिनिक हर महीने लगभग 250 नए मरीज़ों का इलाज करता है। सभी मरीज़ों की नियमित तौर पर आँखों की जांच भी की जाती है। पिंगलवाड़ा का अपना अल्ट्रासाउंड सेंटर है, जहाँ हर महीने मरीज़ों, कर्मचारियों और उनके परिवारों के 40 से अधिक टेस्ट किए जाते हैं। ई.एन.टी. (कान, नाक, गला) के मरीज़ों का इलाज हफ्ते में एक बार डॉ. जगदीपक सिंह (प्रोफेसर, ENT, सरकारी मेडिकल कॉलेज अमृतसर, और सदस्य पिंगलवाड़ा सोसाइटी) द्वारा किया जाता है। इसके अलावा, मेडिसिन, हड्डियों (Ortho) और आँखों के विशेषज्ञ डॉक्टर भी नियमित तौर पर पिंगलवाड़ा में मरीज़ों की जांच करते हैं। सभी मानसिक मरीज़ों को नियमित तौर पर मानसिक अस्पताल में फॉलो-अप जांच के लिए भेजा जाता है।

कॉक्लियर इम्प्लांट सर्जरी-

18 और 19 अप्रैल 2015 को, पिंगलवाड़ा की मानांवाला शाखा में एक लाइव कॉक्लियर इम्प्लांट सर्जरी की गई। इस सर्जरी में 6 साल के बहरे लड़के धर्मवीर सिंह और 5 साल की लड़की महक का इलाज किया गया, जो कि बहुत गरीब परिवारों से संबंधित थे। इस प्रयास का उद्देश्य इन बच्चों को सुनने की क्षमता मुहैया करवाना था और यह सर्जरी पिंगलवाड़ा की सामाजिक और मेडिकल सेवा की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

स्पाइनल कॉर्ड इंजरी और रिहैबिलिटेशन सेंटर-

पिंगलवाड़ा में स्पाइनल कॉर्ड इंजरी से पीड़ित व्यक्तियों के लिए रिहैबिलिटेशन सेंटर की शुरुआत 11 फरवरी 2020 को की गई। इसका उद्घाटन समारोह अमृतसर के उस समय के डिप्टी कमिश्नर स. शिवदुलार सिंह ने किया। असल

में, मेडिकल डॉक्टर और स्पाइनल कॉर्ड के विशेषज्ञ भी रिहैबिलिटेशन के तरीके के बारे में बहुत जानकारी नहीं रखते। इस कारण, स्पाइनल कॉर्ड इंजरी पीड़ित व्यक्ति अपने रोज़मर्रा के कामों के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं। वे बेड-सोर्स, यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्शन और डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। स. दविंदर सिंह, जो कि स्पाइनल कॉर्ड इंजरी एसोसिएशन ऑफ इंडिया के उप-प्रधान हैं, ने दिल्ली में शुरू किए गए एक रिहैबिलिटेशन सेंटर से प्रशिक्षण लिया। अब वे कार चला सकते हैं, व्हीलचेयर से बिस्तर या टॉयलेट में सुचारू तरीके से जा सकते हैं और अपने शरीर का ध्यान रखते हैं ताकि बेड-सोर्स न हों। वे व्यापार भी कर रहे हैं। इससे प्रेरित होकर, पिंगलवाड़ा ने स्पाइनल कॉर्ड इंजरी पीड़ित व्यक्तियों के लिए मुफ्त सेवाओं की शुरुआत की। हर कोई दिल्ली जाने के लिए आर्थिक तौर पर समर्थ नहीं होता, क्योंकि वहाँ सेवाएं महंगी हैं। 11 फरवरी 2020 से, पिंगलवाड़ा के सात स्थायी निवासी रिहैबिलिट किए गए हैं और ज़्यादातर अब प्रशिक्षकों के रूप में काम कर रहे हैं। स. इमरान, जो खुद भी स्पाइनल कॉर्ड इंजरी पीड़ित हैं, ने मरीज़ों को विशेष व्हीलचेयर उपयोग करने का प्रशिक्षण दिया। ये मरीज़ अब अपने रोज़मर्रा के कामों में स्वतंत्र हो गए हैं, साथ ही पिंगलवाड़ा में सेवा भी देते हैं, जैसे कि बेकरी में काम करना। दो मरीज़ों को लवली यूनिवर्सिटी में परीक्षा के लिए भेजा गया। उनके द्वारा तैयार किए गए बिस्कुट पिंगलवाड़ा के सभी निवासियों द्वारा खाए जाते हैं। दो मरीज़ प्रिंटिंग प्रेस में काम करते हैं। पिंगलवाड़ा सारे भारत से व्यक्तियों को एक महीने के लिए रिहैबिलिटेशन के लिए दाखिल करता है। दो व्यक्ति ही एक बार में दाखिल हो सकते हैं। जब वे स्वतंत्र हो जाते हैं, वे अपने घर भेजे जाते हैं और फिर दो और व्यक्ति दाखिल किए जाते हैं।

रिहैबिलिटेशन सेवाएं

1. काउंसलिंग - डिप्रेशन से मुक्ति
2. मेडिकल सेवाएं - गुर्दे की हालत और अन्य टेस्ट
3. फिजियोथेरेपी और एक्सरसाइज - बांहें और पीठ
4. ऑक्यूपेशनल थेरेपी
5. ध्यान / मेडिटेशन
6. व्हील चेयर प्रशिक्षण

इस सेंटर के प्रयासों के कारण स्पाइनल कॉर्ड इंजरी पीड़ित व्यक्ति न केवल स्वतंत्र हो जाते हैं, बल्कि वे अपने परिवार और समाज के लिए भी लाभदायक बन सकते हैं।

समस्त अध्ययन के बाद हम कह सकते हैं कि ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी समाज सेवा के क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाली एक महत्वपूर्ण संस्था है जो अपनी विभिन्न सेवाओं के माध्यम से समाज सेवा के कार्यों में निरंतर अग्रसर रहती है। बेसहारा लोगों और मरीजों की निस्वार्थ भाव से सेवा करने वाली यह संस्था न केवल ऐसे लोगों के लिए एक उम्मीद और आसरा बनी हुई है बल्कि समाज को इस तरह की निस्वार्थ सेवा करने का संदेश भी प्रदान करती है।

संदर्भ और टिप्पणियाँ:

1. कांग, कुलबीर सिंह. (1996). एक मसीहा और. अमृतसर: ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी.
2. सोच, नरिंदर सिंह. (2003). माता महताब कौर और भगत पूरन सिंह, अमृतसर: ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी. पृ
3. भगत पूरन सिंह. (2003). बे-अपाहिजों और रोगियों की सेवा-संभाल के लिए धर्म स्थानों पर धर्मी लोगों का कर्तव्य. अमृतसर: ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी.

4. भगत पूरन सिंह. (2003). मेरे जीवन की बे-आसरे अपाहिजों और रोगियों की सेवा-संभाल और कुछ और कहानियाँ, अमृतसर: ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी.
5. Singh, Patwant. Sekhon, Harinder Kaur. (2001). Garland Around My Neck. New Delhi: UBS Publishers' Distributors Ltd.
6. जोशी, स.स. गिल, मुख्तियार सिंह. (1999). पंजाबी-अंग्रेजी कोश, पटियाला: पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला.
7. सोच, नरिंदर सिंह. (2003). भगत जी की सफल भई यात्रा, अमृतसर: ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरिटेबल सोसाइटी.